भजन

तर्ज–हाल क्या है दिलो का

ऐ मेरे मेहरबां अपने घर अब तो चल
इस जमीं पर अब अपना गुजारा नही
हर घड़ी का मिलन तो मिलन है पिया
चार दिन का मिलन ये हमारा नही
1–ये मेले भडांरे तो होते रहे,
हम बिछुड़ते रहे और रोते रहे
अब तो सहने की हिम्मत खत्म हो चुकी,
ये नजारा पिया कुछ नजारा नही
2–मुद्दतों से बिछड़ कर मिले है अभी,
फिर न जाने मिलन हो कहां और कभी
प्यार से यूं गले से लगा कर पिया,
ये सहारा पिया,वो सहारा नही
3–भूल हमरी हमारी ख़ता बख्श दो,
ले चलो फिर जो चाहे सजा सख़्त दो
यूं बिछड़ के तो चलना भले ठीक था,
पर यूं मिलकर बिछुड़ना गंवारा नही